

सूर्य देव चालीसा

॥दोहा ॥

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग,
पद्मासन स्थित ध्याइए, शंख चक्र के सङ्ग ॥

जय सविता जय जयति दिवाकर,
सहस्रांशु सप्ताश्व तिमिरहर ॥
भानु पतंग मरीची भास्कर,
सविता हंस सुनूर विभाकर ॥

विवस्वान आदित्य विकर्तन,
मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥
अम्बरमणि खग रवि कहलाते,
वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥

सहस्रांशु प्रद्योतन, कहिकहि,
मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥
अरुण सदृश सारथी मनोहर,
हांकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥

मंडल की महिमा अति न्यारी,
तेज रूप केरी बलिहारी ॥
उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते,
देखि पुरन्दर लज्जित होते ॥

मित्र मरीचि, भानु, अरुण, भास्कर,
सविता सूर्य अर्क खग कलिकर ॥
पूषा रवि आदित्य नाम लै,
हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै ॥

द्वादस नाम प्रेम सों गावैं,
मस्तक बारह बार नवावैं ॥
चार पदारथ जन सो पावै,
दुःख दारिद्र अघ पुंज नसावै ॥

नमस्कार को चमत्कार यह,
विधि हरिहर को कृपासार यह ॥
सेवै भानु तुमहिं मन लाई,
अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥

बारह नाम उच्चारन करते,
सहस जनम के पातक टरते ॥
उपाख्यान जो करते तवजन,
रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥

धन सुत जुत परिवार बढ़तु है,
प्रबल मोह को फंद कटतु है ॥
अर्क शीश को रक्षा करते,
रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत,
कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥
भानु नासिका वासकरहुनित,
भास्कर करत सदा मुखको हित ॥

ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे,
रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥
कंठ सुवर्ण रेत की शोभा,
तिग्म तेजसः कांधे लोभा ॥

पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर,
त्वष्टा वरुण रहत सुउष्णकर ॥
युगल हाथ पर रक्षा कारन,
भानुमान उरसर्म सुउदरचन ॥

बसत नाभि आदित्य मनोहर,
कटिमंह, रहत मन मुदभर ॥
जंघा गोपति सविता बासा,
गुप्त दिवाकर करत हुलासा ॥

विवस्वान पद की रखवारी,
बाहर बसते नित तम हारी ॥
सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै,
रक्षा कवच विचित्र विचारे ॥

अस जोजन अपने मन माहीं,
भय जगबीच करहुं तेहि नाहीं ॥
दद्रु कुष्ठ तेहिं कबहु न व्यापै,
जोजन याको मन मंह जापै ॥
अंधकार जग का जो हरता,
नव प्रकाश से आनन्द भरता ॥

ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही,
कोटि बार मैं प्रनवौं ताही ॥
मंद सदृश सुत जग में जाके,

धर्मराज सम अद्भुत बांके ॥

धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा,
किया करत सुरमुनि नर सेवा ॥
भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों,
दूर हटतसो भवके भ्रम सों ॥

परम धन्य सों नर तनधारी,
हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी ॥
अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन,
मधु वेदांग नाम रवि उदयन ॥

भानु उदय बैसाख गिनावै,
ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै ॥
यम भादों आश्विन हिमरेता,
कातिक होत दिवाकर नेता ॥

अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं,
पुरुष नाम रविहैं मलमासहिं ॥

॥दोहा ॥

भानु चालीसा प्रेम युत, गावहिं जे नर नित्य,
सुख सम्पत्ति लहि बिबिध, होंहिं सदा कृतकृत्य ॥

Source: <https://www.bharattemples.com/surye-dev-chalisha/>



Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App

<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZjyhhKzSUD-Lt9Tw>